DOON UNIVERSITY
NEWSPAPER CLIPPING SERVICES

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

दुनिया में उद्योगों से फैल रहा सबसे ज्यादा प्रदूषण

नेशनल एयरोसोल कांफ्रेंस में वैज्ञानिकों ने किया मंथन

देहरादून, वरिष्ठ संवाददाता। वर्तमान में हर जगह सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण उद्योगों की वजह से फैल रहा है। दिल्ली इसका ताजा और उग्र उदाहरण है। यह बात दुनियाभर से आए विशेषज्ञों ने दून विवि में मंगलवार से शुरू चार दिवसीय नेशनल एयरोसोल कांफ्रेंस में कही। कांफ्रेंस में विशेषज्ञों ने प्रदूषण के मुख्य कारण और निदान पर चर्चा की।

कांफ्रेंस का शुभारंभ विधायक मुन्ना सिंह चौहान, दून विवि की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल और विज्ञानी विवि के पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर व वैज्ञानिक डॉ.प्रतिम विश्वास ने किया। कार्यक्रम को संयोजित करते हुए विधायक चौहान ने कहा कि आज पूरी दुनिया वायु प्रदूषण से परेशान है।

खासकर हिमालयी क्षेत्रों में इसका सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। यहां ग्लेशियर पिघलने, जलवायु परिवर्तन, बारिश और बर्फबारी के चक्र में बदलाव व वातावरण में ब्लैक कार्बन की अधिकता चिंताजनक है। इसे देखते हुए हमें प्रदूषण नियंत्रण के लिए ज्यादा सजग होना होगा। उन्होंने कहा भी सलाह दी कि दून में होने वाली इस कांफ्रेंस में प्रदूषण से निपटने को लेकर विशेष रणनीति बनाई जानी चाहिए।

मुख्य वक्ता के तौर पर प्रो.विश्वास ने कहा कि विश्व में वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। उनके देश अमेरिका के मिशगन में भी ग्लेशियर पिघल रहे हैं। उन्होंने कहा-भारत जैसे देशों में बढ़ते प्रदूषण के पीछे मुख्य कारण उद्योग हैं। इसके अलावा वाहनों का जाम, निर्माण, कूड़ा जलाना व फसलों का बचा वेस्ट जलाना प्रदूषण के मुख्य कारण हैं। हमें इनका पता तो है, पर इन्हें रोकने के लिए काम नहीं होता।

प्रो. विश्वास ने कहा, कम समय तक प्रदूषण से निपटने को मास्क पहनना और एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल उपयोगी है। इसके अलावा स्मोक टावर और आर्टिफिशयल रेन आदि का भी इस्तेमाल हो सकता है। लेकिन ये ज्यादा समय तक प्रदूषण को कम करने में उपयोगी नहीं है। इसके लिए हमें बड़े उपाय करने होंगे।

दून विश्वविद्यालय में मंगलवार को विधायक मुन्ना सिंह चौहान और कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने नेशनल एयरोसोल कांफ्रेंस का उद्घाटन किया। ● हिन्दुस्तान

कार्बन कैप्चर भी बड़ी क्रांति

दून विवि के पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर डॉ. विजय कीयर ने बताया कि दुनियाभर में हवा में मौजूद कार्बन को सोखने के लिए भी विशेष तरह की तकनीक का इस्तेमाल होने लगा है। अगर हम उद्योगों में या फिर प्रोजेक्टों में किसी भी ईंधन का इस्तेमाल केवल आक्सीजन की मौजूदगी में करें तो उससे हवा में केवल कार्बन ही आएगा। जिसे हम नई तकनीक के माध्यम से कैप्चर कर फिर इस्तेमाल कर सकें। देश में एनटीपीसी जैसे कुछ संस्थानों ने इसका प्रयोग के तौर पर इस्तेमाल शुरू कर दिया है, जो वायु प्रदूषण रोकने में एक बड़ी क्रांति साबित होगा। कांफ्रेंस में एरीज के निदेशक डॉ. मनीष नाजा, आईआईआरएस निदेशक डॉ.आरपी सिंह, आईएएसटीए के सचिव मनीष जोशी आदि मौजूद रहे।

News paper –Hindustan
Date– 18.12.2024